

DPN 5745

Title : बारहसरी BĀRHŚARĪ

Run. No. 6436

Cat. No.

Micro. No.

Subject नारिकेल / Alphabet
गीतमय / in long form

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Hindi

Size in cms. 31 x 11

Folios 4

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1873

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
श्री गणेशाय नमः ॥ कृष्ण कालियुग नाम अष्टोत्तर ॥ प्रभु सुमित्रो रहा तो भव पारा ॥

પ્રમાણ / Post-Collection

શ્રી શ્રી સુદામા જી કા બાહુ કાશે સમ્પૂર્ણ સમ્મા ૧૮૭૩ મીની મુદ્રા થાઈ •

પદનાથે શ્રી ગોસાઈ શ્રી સુદલ ગિરિજી લાલનાથે જસરાજ ગિરિજી દુમદ ॥

25

15

10

5

0

Cms.

5

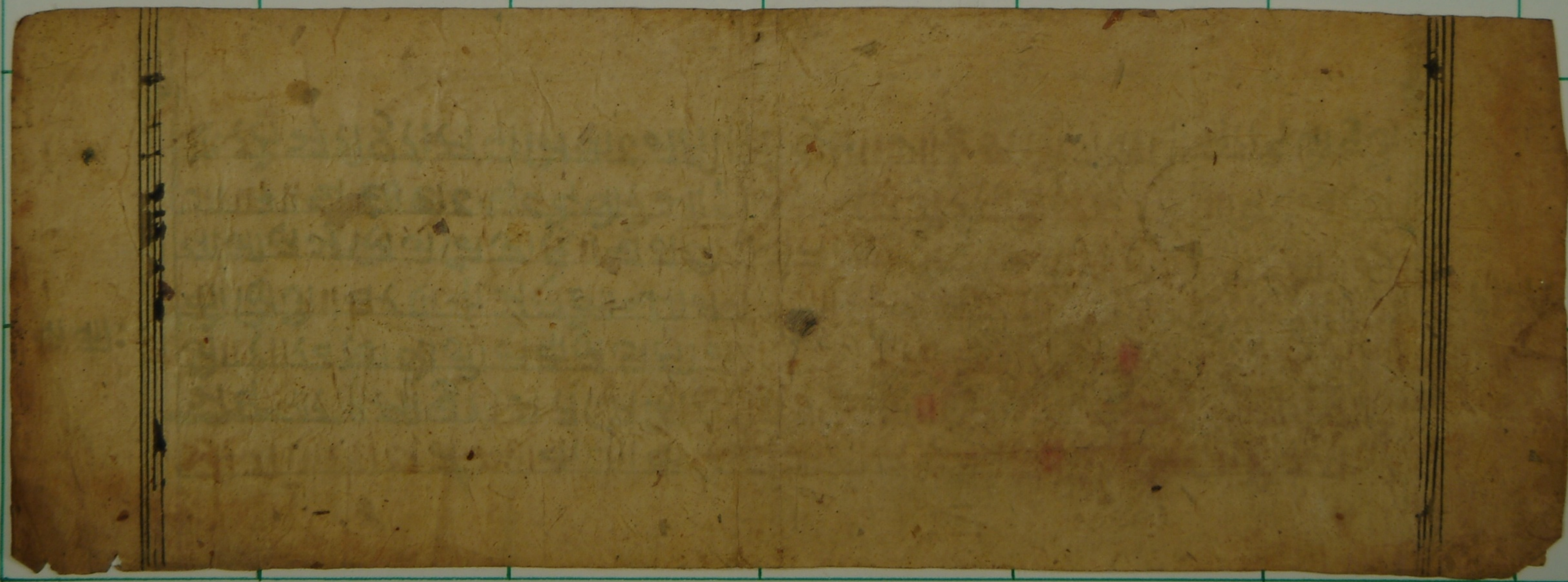
10

15

20

25

30



क का:

श्री गणेशाय नमः॥ क का कलि जुग नाम स्रवारा॥ प्रभु संमिरो रक्षा तरो
भय पारा॥ साधु संगत मिलि हरी रस पि जै॥ जिवन जन्म सु फल करी लि
जै॥ शारवरा षो जो सकल जहा ना॥ जा को गावे वेद पुरा ना॥ निर्भय नाम हरी
को लि जै॥ वरण कमल को चपान घरी जै॥ श ग गा गु ए गो विन्द गु ए गा वो मा
या जाल भुलि जनि जाहु॥ चन यौ वन तन संग पतंगा ध ए मे धार हो ३ ३
गा॥ ३॥ घ घा घट घट दे षो रे भा ३॥ जल थल मेर हा प्रभु समा ३॥ पि ए ब्रह्मा
एर हे भरी पुरी सदानि कटन ही हरी दुरी॥ भा ३॥ ड डानि गणो जि करी दे षो पु जे

॥१॥

राम

श्रुवर को हि मती दे षो॥ सप्त दीप श्रुवर ब्रह्मा एष धि द्या इर हे नौ पंडा॥ पा॥
व वाचि सनि श्रुल करी रा षो मिथा वाद जुड मति भा षो॥ सत्प वचन तप समा
ना॥ जुडा वचन सो हि पाप समा ना॥ ६॥ ध धा धल वल तप जो विकारा॥ निर्भये
नाम जपो ये क सारा॥ काम को च को तप जो प्र संगार हि के ये सदा संतन को
संगा॥ ७॥ ज जुा जपो जगत्प जि के संग॥ जा को चावे हर तप ती शा॥ निशि वी
सा सर हो मन ला ३॥ हरी पद वरण कमल सुषदा ३॥ ८॥ ज जा जे र ए कि जो भा
३॥ शिर पर काल रथो म डरा इवे तना हो ३ तो हरी सरणा रहियो॥ काल त्रास

काका:

काहे कौ सही ॥१॥ ननानिरषी नीषीहरी रूपनी सारो वि ततेय्या न पलजनि
ठारो ॥ आठो पहरर हो लवला इहरी पदचरन कमल सुपाइ ॥१०॥ टटा तो डोयु
गके माता नहि कोहि मातु पिता सुत भ्राता ॥ हरि ॥ तुलसि कोहि आपना पु
गव वहारर पति को सयना ॥११॥ ठठा ठा कर पर न सने सिजन सही दिन मर
देहि ॥ नर देहि को लाहो लिजै ॥ प्रम मग ॥ सो इहरी रस पिजै ॥१२॥ उडां हां डोल
वी तजनि करोहि दय चान चनि को चरीजो ॥ आन देव काहे कौ च्या वो दीढ वि
आस विष्णु गुन गावो ॥१३॥ ठठा ठुडन काहा जाईये भाई रो मुरो म प्रभुर हेस

२
राम:

माइ ॥ पिण ब्रह्मा एरहे भरि पुरा सदानि कठहरा नाहि दुरी ॥१४॥ एणाने ह निरंत
तरला वो प्रेम मग नर सना गुण गावो ॥ दो भा पा भु मंत जो मन भ्रा संत जना को
लिजै साथ ॥१५॥ तज्जति री सुफल कमाईयो नर देहि सुमिरन को पाई ॥ हरी भ
जो गर्भ वास ते दुडी हारा मना मये ॥ सो घन लुटी हो ॥१६॥ थथा थोरो जिवनु
भाई प्रभु विनु जन्म प्रकार थ जाई ॥ चेतन हो इहरी रस सरसि ये हरी नाम उ
छारो तन कि विवि चिता पनि वारी ॥१७॥ दवा देष को रग वेवतार माया जाल व
च्यो संसारा ॥ वंचन ते जो दुडी वासि ये सरण जाई संतन दोरसि ये ॥१८॥ चचा च
रुद ये चर भाई संतन को प्रभु दस दास साई ॥ सदा स मि पनि मि पन हिं

गुनावा ६७ भुक्ती नहि गावे को लायी मर्म भुलिरह्यो अं चार

कका:

हरै संतन के प्रभुर छा करे ॥ १९ ॥ न नाना गानि रंतर लिजै संत जन कि सेवा
किजै सा विभक्ति भगवान् को भावे प्रेम सफित प्रभु के गुण गावे ॥ २० ॥ पुष्प
परी जन्म गुमायो जन्म गुमायो कै ते लाया ॥ २१ ॥ फफा फेरी फरी पयो मोह
कि फे पाशु जल न चेत्यो मरु पशु च ॥ गुरु चरण कि चर्म निखासा हरी भाज
छु डै यम कि नासा ॥ २२ ॥ ववा वोलो प्रभु मरुत वाणि सइना प्रत प्रेतर सधा
नि ॥ हरी हिराष्ट पये राखो कडु कवच न सुख ते जजि माषो ॥ २३ ॥ मन्मा भुलो म
न सम गावो भाई जै सै भाव स्व गरव हरि न खाई ॥ ये सि भगति करो मन मेरा ज
राम रण हो वे नहि तेरा ॥ २४ ॥ मन्मा मोह जाल भव ता गर भारी धि मरका

३
राम:

लमिन साश ॥ जाल लि ये यम फिरत अहेरा हरा विमुख न पर देत दरेरा ॥ २५ ॥ य
या ये सि अ व सरण दि वार वारा ता ते पुनि करहु पुकारा ॥ मातो वा मि तु मुख तुर स
याना विषयर सधा ठि भजो भगवाना ॥ २६ ॥ हरार ठ ज हरि संला वो हिरा जन्म जनि
वा गुवा वो ये सो हिरा जग मै जय है और धितै फिरि पद्यु तै है ॥ २७ ॥ ललाल लाल प्र
मोल कम न सरणा तन भंडार जतन करी चरना ॥ प्रभु लाल गुरु देवल खाये
लाला भ स दुर वहा रे ॥ २८ ॥ वौ वउनु गुरु की वलि हारी जो सौ वस्तु गोचर है
वार वानु विठनु धि मथा उनु पद वरण कमल चित्र रसना ॥ २९ ॥ शशासत गु
रु की कस्तूर डुडायि मलिमा ॥ प्रमी कधु वरणी न जाई ॥ वि तल उपो स

ककाः

तं गुरु के चरणारोहो ईक संल गिवर ए॥ ३०॥ पञ्चाषे विलियो गुरु किं वंरं ए॥ अ
फनी वो रामाया फंदा पल कमे तो राति भये मयो सव सौत्पा गिज वं सौ गुरु
वर्णः र एचि तला गी॥ ३१॥ सत्या सो न विचार मे द्यो गिव ज व सौ दय कजा
न पिये गुरु त व सौ ना स्ये तिसर भयो पु गा सा मा नोर दि पुराण प्र गा सा॥ ३२॥
ह सा हरी गयो पाप रा को त पाप श्री गुरु चरण कमल पर ताया॥ जै सो चु दये यो
वहु वो रा पु ग हो भानु ज व भयो उ जे रा॥ ३३॥ को का थु द्यो जै विष वं च न सौ व
हिये स स गुरु चरण शरण र हिये न म अ स्म त पियो र स जाना गर्भ वा स
मे पयाना॥ ३४॥ इति श्री सु दामा निका वार ह वरी सं मं पु एं सं म्वत् १८ १३ मी ती भ
पठ ना र्थे श्री गो सा ई श्री सु फल गिर जी लण ना र्थे ज स रा ज गिर जी भु र

॥ ५॥

रामः

वज्रु दि

२२